AYU

Access this article online
Website: www.ayujournal.org
DOI: 10.4103/0974-8520.110523
Quick Response Code:

Review Article

sushruta-samhitA: A critical review Part - 2: Few new additions

Hari S. Sharma, Hiroe I. Sharma[1], Hemadri A. Sharma[2]

Ex. Director, National Institute of Ayurveda, Jaipur, Rajsthan and Ex. Dean cum Hospital Superintendent, Institute for Post Graduate Teaching and Research in Ayurveda, Gujarat Ayurved University, Jamnagar, Gujarat, [1]President, Osaka Ayurveda Kenkyusho, AIHORE pratiSThAnam, Japan, [2]Post Graduate Scholar, Department of Dravyaguna, Shri SJG Ayurveda Institute and PG Centre, Koppal (DK), Karnataka, India

Abstract

In this part importace and specialize of *sushruta* are specified. In Part – I all the translation works in all the available languages is narrated. After studying all those books and keeping in to mind about a comprehensive work of *sushruta* it is necessary to elaborate in this present text. This part is divided into 5 sections. (A) All available commentaries taken in to consideration for this part is written, (B) Specialities of *sushruta* are most important as he has narrated all eight sections of Ayurveda elabroted widely where as *caraka* has only narrated mainly selected part of *kAya-cikitsA* and left other sections for other authors e.g., "*atra dhAnavantareyaNAM adhikArah*" etc., Specifying a list of all sections and chapters with the numbers of prose + poetery, (C) None of the translator or commentator touched the importance of *sushruta* in the literature of *samskRta*, where as *sushruta* was a great poet. Giving similar resemblance of common use by mass, he tried to explain the tough subject in simpler mode of knowledge for proper understanding to all public. He has specifically selected the prosody for the specified subject. Examples are given in this section. (D) *sushruta* has written prosody in14 metres and long sentences too in *samskRta* that shows his ability and wast knowledge in the literature. All references of each and every metre is noted from all sections of *sushruta* with complete reference numbers. And no where this subject is published till now- (E) A challenging word regarding the work of *sushruta* "*shArIre sushruto naSTah*" is turned back while quoting various references of *shArIra-sthAnam* and placing its world wide importance by various writers.

Key words: Ayurveda, *caraka, sushruta, sushruta samhitA*

[A] सुश्रुत पर टीकायें :–

संस्कृत भाषा में कार्तिककुण्ड, गयदास, जेज्जट, भास्कर, माधव आदि के द्वारा लिखित १९ टीकायें थीं, पर वर्तमान में अधरांकित चार टीकायें ही उपलब्ध हैं–––

१. संपूर्ण ''निबन्ध संग्रह''– वैद्य श्रीडल्हण (वैद्य भरतपालपुत्र, सूर्यवंशी ब्राह्मण);
२. मात्र निदान स्थान –''न्याय चन्द्रका बृहत् पञ्जिका''– श्री गयदास (दशम शताब्दि)
३. मात्र सूत्र स्थान –''भानुमती''––श्री चक्रपाणिदत्त (एकादश शताब्दि)
४. सुश्रुतार्थ सन्दीपनी – कविराज हाराण चन्द्र चक्रवर्ती (१९०८ वर्षे कोलकाता)

Address for correspondence: Prof. Hari Shankar Sharma, AIHORE pratiSThAnam, Osaka Ayurveda Kenkyusho, Nishinakajima, 4 Chome, 7-12, 501 Shi, Yodogawa-Ku, City – Osaka, (Zip code – 532 0011), Japan.
E-mail: aihore@yahoo.com

[B] सुश्रुत की विशेषतायें तथा चरक से साम्यता :–

इस बार के स्वाध्याय में सुश्रुत की विशेषतायें तथा चरक से साम्यता का वर्णन किस किस सन्दर्भ पर मिलता है, मात्र उसी का उल्लेख यहाँ प्रस्तुत है:–

१) सूत्र स्थान

प्रथम अध्याय का नाम ही पढ़ें सुश्रुतः ''वेदोत्पत्ति'', सुश्रुत शारीर स्थान प्रथम अध्याय ''सर्वभूतचिन्ता'' प्राणिमात्र के लिये । चरक सूत्र स्थान प्रथम अध्याय ''दीर्घञ्जीवितीय'' चरक शारीर स्थानः प्रथम अध्याय ''कतिधा पुरुषीय'' मानवमात्र के लिये ।

अत एव स्थान परक अध्यायों के नाम और श्लोक संख्या लिख देने से सुश्रुत की विशेषताओं का बोध हो सकेगा । इसके तीसरे अध्ययन–

संप्रदानीय नामक अध्याय के ५६ गद्य-पद्यों में सम्पूर्ण सुश्रुत संहिता के अध्यायों का नामोल्लेख मिलता है, जिसमें उत्तर तन्त्र के सभी अध्यायों का समावेश है । अन्त में भी सुश्रुत लिखते हैं कि ''सहोत्तरं त्वेतदधीत्य सर्वं ब्राह्यं विधानेन यथोदितेन; न हीयतेऽर्थान् मनसोऽभ्युपेतान् एतद् वचो ब्राह्मम् अतीव सत्यम् (उ.तं. ६६/१७)'' इससे प्रमाणित होता है कि तथाकथित ''बाद में किसी के द्वारा जोड़ा गया उत्तर तन्त्र'' लेख निर्मूल है ।

चौथे प्रभाषणीय नामक अध्याय में पाँचवें पद्य का ''विमलविपुलबुद्धेरपि बुद्धिम् आकुलीकुर्युः किं पुनरल्पबुद्धेः (च.सू. १५/५)'' का पद्य तथा तेरहवें जलौकावचारणीय का १५ वाँ और उन्नीसवें व्रणितोपासनीय का २४ वाँ ''भवति चात्र'' तथा २२वें व्रणास्रावविज्ञानीय का ''श्लोकौ चात्र भवतः'', (सु.सू. ४६/१३८) चरः शरीरावयवाः (च.सू. २७/३३९), भी चरक में यथावत् विद्यमान है ।

दसवें विशिखानुप्रवेनीय में छात्रों के लिये ''स्त्रीभिः सहास्यां संवासं परिहासं च वर्जयेत्'' नियम, पन्द्रहवें दोषधातुमलक्षयवृद्धिविज्ञानीय का ''स्वस्थ लक्षण'' विश्व स्वास्थ्य संगठन की मान्यता पाकर आज जगत् प्रसिद्ध हो चुका है ।

सोलहवें कर्णव्यधबन्धविधि अध्याय के ''ओष्ठ-कर्ण-नासादिसन्धान'' ने तो इतिहास में सुश्रुत को अमर कर दिया । उन्नीसवें व्रणितोपासनीय का २७ ''वेदादिविहितविधानैः रक्षाविधानम्''; इक्कीसवें व्रणप्रश्न का ''षट् क्रियाकाल''और ''शोणितचतुर्थेः (दोषैः)'' रक्त को चौथा दोष मानना; २४ वें व्याधिसमुद्देशीय का कुपितानां हि दोषाणाम् ...., २५वें का मर्म विद्ध शरीर, २६ वें के २०, २१ वें का पद्यार्थ ''सोना, चाँदी, ताँबा,पीतल,वंग, सीस एवं इसी प्रकार के बने शल्य अधिक दिनों तक शरीर में पड़े रह कर धातुओं में विलीन हो जाते हैं''; २८ वें का श्लोक ५ रसायनपरैररिष्टनिवारणम्, ३६ वें का औषधग्रहण एवं भेषजगार, ४० वें का प्रमाणों में आगम को बलीयान् बतलाना(प्रत्यक्षफलत्वेन), आहारोपकल्पना, आहारविधि, दन्तशोधन, अजीर्ण-आमदोष, ''कर्मभिस्त्वनुमीयन्ते नानाद्रव्याश्रया गुणाः'' शीतादि दश गुण, द्रवादि दश गुण, व्यवायी, विकासी, आशुकारी सुश्रुत का अपना है ।

बीसवें हिताहितीय के श्लोक २२ ''सात्म्यतोल्पतया वापि....'' को चरक ने सू. २६/१०६ पर ले लिया है । इक्कीसवें व्रणप्रश्न के ''दोषों का पञ्चविधत्व'', २८ वें का अरिष्ट वर्णन, ३४ वें में वैद्यादिगुण, ३५ वें का ''या ह्युदीर्णं शमयति.'', चरक में भी शब्दान्तर से मिलता है ।

सामिषाहार एवं निरामिषाहार के सम्बन्ध में आचार्य सुश्रुत के विचारः-

पञ्चभूतात्मके देहे ह्याहारः पाञ्चभौतिकः । विपक्वः पञ्चधा सम्यग्गुणान् स्वान् अभिवर्धते ।। (सू. ४६/५२६) से आयुर्वेदीय आहार का स्वतन्त्र अस्तित्व सिद्ध किया है । इस स्थान में चिकित्सा भी यत्र-तत्र-सर्वत्र उपलब्ध है ।

क्रमांक	अध्याय-नामोल्लेख	क्रमांक	अध्याय-नामोल्लेख
१.	वेदोत्पत्ति	२.	शिष्योपनयनीय
३.	अध्ययन-संप्रदानीय	४.	प्रभाषणीय
५.	अग्रोपहरणीय	६.	ऋतुचर्या
७.	यन्त्रविधि	८.	शस्त्रावचारणीय
९.	योग्यासूत्रीय	१०.	विशिखानुप्रवेनीय
११.	क्षारपाकविधि	१२.	अग्निकर्मविधि
१३.	जलौकावचारणीय	१४.	शोणितवर्णनीय
१५.	दोषधातुमलक्षयवृद्धिविज्ञानीय	१६.	कर्णव्यधबन्धविधि
१७.	आमपक्वैषणीय	१८.	व्रणालेपनबन्धविधि
१९.	व्रणितोपासनीय	२०.	हिताहितीय
२१.	व्रणप्रश्न	२२.	व्रणास्रावविज्ञानीय
२३.	कृत्याकृत्यविधि	२४.	व्याधिसमुद्देशीय
२५.	अष्टविधशस्त्रकर्मीय	२६.	प्रनष्टशल्यविज्ञानीय
२७.	शल्यापनयनीय	२८.	विपरीताविपरीतव्रणविज्ञानीय
२९.	विपरीताविपरीतदूतशकुनस्वप्ननि दर्शनीय	३०.	पञ्चेन्द्रियार्थविप्रतिपत्ति
३१.	छायाविप्रतिपत्ति	३२.	स्वभावविप्रतिपति
३३.	अवारणीय	३४.	युक्तसेनीय(विषरक्षित राजा)
३५.	आतुरोपक्रमणीय	३६.	भूमिप्रविभागीय
३७.	मिश्रक	३८.	द्रव्यसंग्रहणीय
३९.	संशोधन-संशमनीय	४०.	द्रव्यरसगुणवीर्यविपाकविज्ञानीय
४१.	द्रव्यविशेषविज्ञानीय	४२.	रसविशेषविज्ञानीय
४३.	वमनद्रव्यविकल्पविज्ञानीय	४४.	विरेचनद्रव्यविकल्पविज्ञानीय
४५.	द्रव्यद्रव्यविधि	४६.	अन्नपानविधि

२) निदान स्थान

क्रमांक	अध्याय-नामोल्लेख	गद्य - पद्य संख्या
१.	वातव्या धिनिदानोपक्रमः	९१
२.	अर्शोनिदानोपक्रमः	२६
३.	अश्मरी निदानोपक्रमः	२८
४.	भगन्दर निदानोपक्रम:	१३
५.	कुष्ठनिदानोपक्रमः	३४
६.	प्रमेह निदानोपक्रमः	२७
७.	उदर निदानोपक्रमः	२५
८.	मूढ़गर्भनिदानोपक्रमः	१४
९.	विद्रधि निदानोपक्रमः	३८
१०	विसर्पनाडीस्तनरोगनिदानोपक्रमः	२७
११	गद्वन्थ्यपच्यर्बुदगलगण्डनिदानोपक्रमः	२९
१२	वह्वध्युपदंशश्लीपदनिदानोपक्रमः	१५
१३	क्षुद्ररोगनिदानोपक्रम:	६१
१४	शूकदोषनिदानोपक्रमः	१८
१५	भ्रूनिदानोपक्रम:	१६
१६	मुखरोगनिदानोपक्रम:	६६
	कुल संख्या	५२८

विशेषतायें:-

अध्याय ४ में भगन्दर की पिडिका और दूसरी पिडिका का भेद बतलाना सुश्रुत के निदान की विशेषता है । अध्याय ८ में माँ के मर जाने पर भी गर्भ की रक्षा कर लेना, अध्याय ९ में अस्थिगत विद्रधि तथा विद्रधि और गुल्म में भेद बतला देना, अध्याय १० में महिलाओं में यदि गर्भाधान नहीं हुआ तो स्तन रोग नहीं होते, आदि सूक्ष्म-सूक्ष्म पहलुओं पर अनेक वर्णन मिलते हैं ।

३) कल्प स्थान

क्रमांक	अध्याय–नामोल्लेख	गद्य – पद्य संख्या
१.	अन्नपानरक्षाकल्पोपक्रमः	८५
२.	स्थावरविषविज्ञानीयोपक्रमः	५५
३.	जप्गमविष विज्ञानीयोपक्रमः	४४
४.	सर्पदष्टविषविज्ञानीयोपक्रमः	४५
५.	सर्पदष्टविषचिकित्सितोपक्रमः	८६
६.	दुन्दुभिस्वनीयकल्पोपक्रमः	३२
७.	मूषककल्पोपक्रमः	६४
८.	कीटकल्पोपक्रमः	१४३
	कुल संख्या	५५४

विशेषतायेंः–

महानस(रसोईघर) में वैद्य कैसा हो, विषदातृलक्षण, चित्त में विषव्याप्ति के प्रतिषेधार्थ हृदयावरण, ५५ प्रकार के स्थावर विष, स्थावर विषों के १० अधिष्ठान, फेनाश्म और हरिताल ये २ धातुविष हैं, शरीर के अवयवविशेष में पहुँचे दूषीविष के लक्षण, जंगमविष के दृष्टि–विशर्धित (पाद मारना) आदि १६ अधिष्ठान, सर्पों के शरीर से विष के निकलने के लिये ''शुक्रं निर्मन्थनादिव'' का उदाहरण अ.३–१४ पर सुतारः (पारदः) डल्हण, सर्पों के ५ भेदः– पुं.स्त्री–नपुंसक,ब्राह्मण आदि जातियाँ, वारि–विप्रशाप से आहत होने पर स्वल्पविष होना, विष के ७ वेगों के लक्षण, विषाचूषणार्थ मृद् युक्तवस्त्र, औषध से बढकर मन्त्रशक्ति, मन्त्र के स्वर–वर्ण से हीन होने से सिद्धि न मिलना, अविष एवं सविष नरलक्षणम्, दैवव्यपाश्रय चिकित्सा, कीटों की वात–पित्त–कफ–सान्निपातिक लक्षणोत्पादक जातियों में रक्तगत लक्षण आदि आदि .....।

४) शारीर स्थान

क्रमांक	अध्याय–नामोल्लेख	वैशिष्ट्य	गद्य – पद्य संख्या
१.	सर्वभूतचिन्ताशारीर	(च.सू. ११/६)११ वैद्य केतु, २० त्रिगुण.+पं.भू.	२२
२.	शुक्रशोणितशुद्धि	२८ पुत्रीयाचार, ६७ पूर्वजन्माभ्यस्तानुवर्तन	५८
३.	गर्भावक्रान्ति	२१ दौर्हृद, ३२ शौनकादिनानर्षिमत, ३५ गुणवत्संतान	३६
४.	गर्भव्याकरण	३/११ प्राणाः, २१ शुक्रधरा कला, ५६ निद्राभ्रमादि, ६३ प्रकृति	९९
५.	शरीरसंख्याव्या	१०/९ स्रोतस्, ४८ प्रत्यक्ष+शास्त्र, शवच्छेदन	५१
६.	प्रत्येकमर्मनिर्देश	२१ शल्यद्धरणे मर्मरक्षा, २९ मर्मणां मानम्	४३
७.	सिरावर्णविभक्ति	वातादीनां प्राकृतवैकृतकर्म, नाभितः प्रसृताः सिराः	२३
८.	सिराव्यधविधि	अव्यध्याःसिराः, विषाण–तुम्ब–जलौका–प्रच्छन्न	२६
९.	धमनीव्याकरण	ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्गानां कार्याणि, स्रोतोलक्षण	१३
१०.	गर्भिणीव्याकरण	अपरापतने दोषाः, सूतिका–धात्री–बाल–चर्या, विद्या–विवाहादि काल	७०
११	कुल संख्या		४४२

सिराव्यध और शोणितमोक्षण में भेद बतला कर, सुविद्धसिरालक्षण लिखाः–

सम्यक् शस्त्रनिपातेन धारया या स्रवेद् असृक् । मुहूर्तं रुद्धा तिष्ठेच्च सुविद्धां तां विनिर्दिशेत् ।। आदि विशेषताओं से भरपूर इस स्थान पर विशेष वक्तव्य ''शारीरे सुश्रुतः श्रेष्ठः'' प्रकरण में बतलाया गया है ।

५) चिकित्सा स्थान

क्रमांक	अध्याय–नामोल्लेख	गद्य – पद्य संख्या
१.	द्विव्रणीयचिकित्साध्यायोपक्रमः	१४०
२.	सद्योव्रणचिकित्साध्यायोपक्रमः	९७
३.	भग्नचिकित्सिताध्यायोपक्रमः	७०
४.	वातव्याधिचिकित्सितोपक्रमः	३३
५.	महावातव्याधिचिकित्सितोपक्रमः	४५
६.	अर्शश्चिकित्सितोपक्रमः	२२
७.	अश्मरीचिकित्सितोपक्रमः	३८
८.	भगन्दर चिकित्सितोपक्रमः	५४
९.	कुष्ठचिकित्सितोपक्रम	७२
१०.	महाकुष्ठचिकित्सितोपक्रमः	१६
११.	प्रमेहचिकित्सितोपक्रमः	१३
१२.	प्रमेहपिडकाचिकित्सि	२०
१३.	मधुमेहचिकित्सितोपक्रमः	३५
१४.	उदर चिकित्सितोपक्रमः	१९
१५.	मूढगर्भचिकित्सितोपक्रमः	४७
१६.	विद्रधिचिकित्सितोपक्रमः	४३
१७.	विसर्पनाडीस्तनरोग	४७
१८.	ग्रन्थ्यपच्यर्बुदगलगण्ड	५५
१९.	वृध्युपदंशश्लीपद	६९
२०.	क्षुद्ररोगचिकित्सितोपक्रम	६३
२१.	शूकरोगचिकित्सितोपक्रम	१८
२२.	मुखरोगचिकित्सितोपक्रमः	८१
२३.	शोफचिकित्सितोपक्रमः	१३
२४.	अनागतबाधाप्रतिषेध	१३३
२५.	मिश्रकचिकित्सितोपक्रमः	४३
२६.	क्षीणबलीयवाजीकरणरसायनोपक्रमः	३९
२७.	सर्वोपघातशमनीयरसायनोपक्रमः	१३
२८.	मेधायुष्कामीयरसायनोपक्रमः	२८
२९.	स्वभावव्याधिप्रतिषेधनीयरसायनोपक्रमः	३२
३०.	निवृत्तसन्तापीयरसायन	४०
३१.	स्नेहोपयौगिकचि.	५७
३२.	स्वेदावचारणीयचि.	२९
३३.	वमनविरेचनसाध्योपद्रवचि.	४७
३४.	वमनविरेचनव्यापच्चि.	२२
३५.	नेत्रबस्तिप्रमाणप्रविभाग:	३३
३६.	नेत्रबस्तिव्यापच्चि.	५१
३७.	अनुवासनोत्तरबस्तिचि.	१२६
३८.	निरूहक्रमचि.	११८
३९.	आतुरोपद्रवचिकि.	७१
४०.	धूमनस्यकवलग्रहः	७१
	कुल गद्यपद्य संख्या	२०३१

२४वें अध्याय में दिनचर्या, रात्रिचर्या, निद्रा, सद्वृत्त, स्त्रीसेवनादि; २४ प्रकार के सोम,सोमसेवनविधि वायोर्विषहते वेगं नान्या बस्तेर्ऋते क्रिया पवनाविद्धतोयस्य वेला वेगमिवोदधेः ।।३०।। बतलाई है ।

६) उत्तर तन्त्र

क्रमांक	अध्याय-नामोल्लेख	गद्य - पद्य संख्या
१	औपद्रविकाध्यायोपक्रमः	४५
२	सन्धिगतरोगविज्ञानीयोपक्रमः	०९
३	वर्त्मगतरोगविज्ञानीयोपक्रमः	३०
४	शुक्लगतरोगविज्ञानीयोपक्रमः	०९
५	कृष्णगतरोगविज्ञानीयोपक्रमः	१०
६	सर्वगतरोगविज्ञानीयोपक्रमः	३०
७	दृष्टिगतरोगविज्ञानीयोपक्रमः	४६
८	चिकित्सितप्रविभागविज्ञानीयोपक्रमः	११
९	वाताभिष्यन्दप्रतिषेधोपक्रमः	२५
१०	पित्ताभिष्यन्दप्रतिषेधोपक्रमः	१६
११	श्लेष्माभिष्यन्दप्रतिषेधोपक्रमः	१८
१२	रक्ताभिष्यन्दप्रतिषेधोपक्रमः	५३
१३	लेखरोगप्रतिषेधोपक्रमः	१८
१४	भेद्यरोगप्रतिषेधोपक्रमः	११
१५	छेद्यरोगप्रतिषेधोपक्रमः	३३
१६	पक्ष्मकोपप्रतिषेधोपक्रमः	०९
१७	दृष्टिगररोगप्रतिषेधोपक्रमः	१००
१८	क्रियाकल्पोपक्रमः	१०६
१९	नयनाभिघातप्रतिषेधोपक्रमः	२०
२०	कर्णगतरोगविज्ञानीयोपक्रमः	१६
२१	कर्णगतरोगप्रतिषेधोपक्रमः	५९
२२	नासागतरोगविज्ञानीयोपक्रमः	२१
२३	नासागतरोगप्रतिषेधोपक्रमः	१२
२४	प्रतिश्यायप्रतिषेधोपक्रमः	४२
२५	शिरोरोगविज्ञानीयोपक्रमः	१८
२६	शिरोरोगप्रतिषेधोपक्रमः	४६
२७	नवग्रहाकृतिविज्ञानीयोपक्रमः	२१
२८	स्कन्दग्रहप्रतिषेधोपक्रमः	१४
२९	स्कन्दापस्मारप्रतिषेधोपक्रमः	०९
३०	शकुनिप्रतिषेधोपक्रमः	११
३१	रेवतीप्रतिषेधोपक्रमः	११
३२	पूतनाप्रतिषेधोपक्रमः	११
३३	अन्धपूतनाप्रतिषेधोपक्रमः	०९
३४	शीतपूतनाप्रतिषेधोपक्रमः	०९
३५	मुखमण्डिकाप्रतिषेधोपक्रमः	०९
३६	नैगमेशप्रतिषेधोपक्रमः	११
३७	ग्रहोत्पत्यध्यायोपक्रमः	२२
३८	योनिव्यापत्प्रतिषधोपक्रमः	३२
३९	ज्वरप्रतिषेधोपक्रमः	३२४
४०	अतिसारप्रतिषेधोपक्रमः	१८२
४१	शोषप्रतिषेधोपक्रमः	५८
४२	गुल्मप्रतिषेधोपक्रमः	१४५
४३	हृद्रोगप्रतिषेधोपक्रमः	२२
४४	पाण्डुरोगप्रतिषेधोपक्रमः	४०
४५	रक्तपित्तप्रतिषेधोपक्रमः	४५
४६	मूर्च्छाप्रतिषेधोपक्रमः	२५
४७	पानात्ययप्रतिषेधोपक्रमः	८१
४८	तृष्णाप्रतिषेधोपक्रमः	३३
४९	छर्दिप्रतिषेधोपक्रमः	३५
५०	हिक्काप्रतिषेधोपक्रमः	३०
५१	श्वासप्रतिषेधोपक्रमः	५६
५२	कासप्रतिषेधोपक्रमः	४७
५३	स्वरभेदप्रतिषेधोपक्रमः	१७
५४	कृमिरोगप्रतिषेधोपक्रमः	४०
५५	उदावर्तप्रतिषेधोपक्रमः	५३
५६	विसूचिकाप्रतिषेधोपक्रमः	२७
५७	अरोचकप्रतिषेधोपक्रमः	१७
५८	मूत्राघातप्रतिषेधोपक्रमः	७२
५९	मूत्रकुच्छ्रप्रतिषेधोपक्रमः	२७
६०	अमानुषोपसर्गप्रतिषेधोपक्रमः	५६
६१	अपस्मारप्रतिषेधोपक्रमः	४१
६२	उन्मादप्रतिषेधोपक्रमः	३५
६३	रसभेदविकल्पोपक्रमः	१७
६४	स्वस्थवृत्तोपक्रमः	८४
६५	तन्त्रयुक्त्यध्यायोपक्रमः	४२
६६	दोषभेदविकल्पोपक्रमः	१७
	कुल गद्यपद्य संख्या	२६५०

विशेषतायें:-

क्रमांक	अध्याय-नामोल्लेख	वैशिष्ट्य
१	क्रियाकल्पोपक्रमः	मनःशिला, ताम्र,आयस, कांस्यादि का वर्तिनिर्माण के लिये उपयोग
२	कर्णगतरोगविज्ञानीयोपक्रमः	भिषग्वरः अच्छे चिकित्सकहेतु
३	स्वस्थवृत्तोपक्रमः	वर्षादिदृक्ऋतुचर्या, रोगपरक एक-द्वि- कालिक शीतोष्णादि आहार से उपचार, औषधकाल, आहारकाल
४	दोषभेदविकल्पोपक्रमः	सहोत्तरं त्वेतदधीत्य सर्वं ब्राह्यं विधानेनयथोदितेन । न हीयतेर्थान् मनसोभ्युपेतादेतद् वचोब्राह्यमतीव सत्यम् ।।इति।।

[C] सुश्रुत में साहित्य

सन् १९५८ से आयुर्वेदीय स्नातकोत्तर शिक्षण केन्द्र जामनगर में पढ़ाते समय चरक के तीन भाषाओं के अनुवाद का ६ खण्डों में उपलब्ध सूची-संकलन का अनुकरण कर मैने भी वानस्पतिक-जांगम-पार्थिव द्रव्यों की सन्दर्भ-सूची बनाई थी । इसका प्रकाशन ''आयुर्वेद की औषधियाँ व उनका वर्गीकरण भाग दूसरा'' के नाम से १९६६ में इन्स्टीट्यूट फॉर आयुर्वेदिक स्टडीज एण्ड रिसर्च, जामनगर द्वारा लेखक कविराज श्री विश्वनाथ द्विवेदी के नाम से हुआ । निघण्टुओं के मेरे व्याख्यानों के समस्त लेखों को मेरी और तथाकथित लेखक की

भाषा-शैली पर इस पुस्तक में ध्यान से पढने वाले लोग आसानी से जान सकते हैं यह उनकी भाषा नहीं है । गुरु-दक्षिणा का यह भी एक आदर्श है । इसी अनुक्रम में:-

अलंकारों में -

(अ) उपमा - समुद्र इव गम्भीरम् (उ. १९/१७), स्फटिकाभं....मधुगन्धि...शुक्रम् इच्छन्ति (शा. २/११) शशासृक् प्रतिमं यत्तु यद्धा लाक्षारसोपमम् । तदार्त्तवं प्रसंशन्ति (शा. २/१७);चन्द्रमण्डलवच्छेदान् पाणिपादेषु कारयेत्। अर्धचन्द्राकृतींश्चापि(सू. ५/१४); ओषध्योमृतकल्पास्तु, शस्क्षाशनिविषोपमाः (सू. ३/५१); कुणपगनन्धि आदि ।। (सू. १४/१६) रसगतिः शरीरे -- ''स शब्द-अर्चिः- जल-सन्तानवत् अणुना विशेषेण अनुधावति एवं शरीरे केवलम्''।।

(आ) रूपक - प्रोद्विद्यमानस्तु यथांकुरेण न व्यक्तजातिः प्रविभाति वृश्रः । तद्वत...विषं शरीरे प्रविकीर्णमात्रम् (क. ८/७९)यथा खरश्चन्दनभारवाही (सू. ४/४)...वायोर्विषहते वेगं नान्या बस्तेर्ऋते क्रिया । पवनाविद्धतोयस्यवेला वेगमिवोदधेः ।। चि. ३५-३०।।

(इ) अनेक प्रकार के अनुप्रास-छेद, अन्त्य-कारयेत् और निधापयेत् (क. ६/२३) आदि ।।

(ई) यमक, उत्प्रेक्षा, आदि

(उ) अतिशयोक्ति की तो बात ही मत पूछो..... आचार्य सुश्रुत न केवल शल्यशास्त्री ही थे, वे एक उत्तम कवि भी थे। इसीलिये गद्य और पद्य दोनो में अपना साहित्य लिखा। क्योंकि अकेले पद्यबद्ध कर देने से कहीं''गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'' कहावत सफल न हो जाय, अतः सुललित शब्दावलि से गद्य रचना भी की ।।

(ऊ) गद्य और पद्य दोनो में लिखे जानेवाले काव्य ''चम्पू काव्य'' कहलाते हैं ।

[D] सुश्रुत में गद्य के अतिरिक्त उपयुक्त विविध वृत्तः

छन्दों में

अनुष्टुभ् (में ८ अक्षर होते हैं) का प्राचुर्य है । फिर भी (११ अक्षर वाले) स्वागता, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, शालिनी,(१२ अक्षरवान्) तोटक, यमुना+मालती, वंशस्य,(१३अक्षर वाली) प्रहर्षिणी, (१४ वाली) वसन्ततिलका, (१५ अक्षरवाली) मालिनी, (१७ अक्षरवाली) धीरललिता और (२१ अक्षरवाली) स्रग्धरा, ये १४ छन्द मिले हैं । इनके सन्दर्भ निम्न लिखित हैं :-

सूत्रस्थाने

इन्द्रवज्रा ५-४२ । उपेन्द्रवज्रा १-२१; ३६-५० । उपजाति १-२१; २-१०; ७-२२; ११-३१; १२-१२; १६-२७ से ३१; १७-७,८,१४ से १६; २५-३१ से ४१; ४४-५ से १५, ९० से ९१; ४५-८३, १४५; ४६-३४ से ५०,२४३ से २४७, ३३१, ४१९ से ४२१, ५०० से ५०३, ५१० से ५१३ । वंशस्थ १-४१; ४६-५३२ । शालिनी ४६-७९ ।।

निदान स्थाने

इन्द्रवज्रा ५-९, ७-३, ६, ८, १२, २०; ११-३,४, ५, ८, १०, १५, १७, १९, २८; १६-३८, ४८, ४९; ५५, ६५, ६६ । वंशस्थ १६-४७ । उपजाति ५-१० से १६; ७-४, ५, ७, ९, १०, ११, १३ से १९, २१, २२, २३; ११-६, ७, ९, ११ से १४, १६, १८, २० से २७; १६-३७, ३९, ५० से ५४, ५३ से ६३ । वसन्ततिलका १०-३ से १४ । शालिनी १-४२ से ४६; १६-४१ से ४५; ।।

शारीर स्थाने

इन्द्रवज्रा शा. ४-७४; ९-११ । उपजाति शा. ६- १८, २०,४२,४३ । उपेन्द्रवज्रा शा. ६-१९ । तोटक शा. ४-७०, ७५ । प्रहर्षिणी शा. ४-६९, ७३ । मालिनी शा. ४-८० । मालती + यमुना शा. ४-६५ । वसन्ततिलका शा. ६-२८ से ३४ । स्वागता शा.४-६६ ।।

चिकित्सा स्थाने

इन्द्रवज्रा ९-१८, २४ से २६; १४-१९; १७-४, ५, ७, १९, २०, ३४, ३७, ३९ से ४७; १८ ३, ५, २०, २४, २६, २८, ३०, ३१, ३२, ३३, ३७, ४३, ४४, ५०, ५३, ५४; २५-२८, २९, ३४, ३५; ३३-२४ । उपजाति ९-१७,१९, २० से २३; १०-३, १७-३, ६, ८ से १८, २१ से २८, ३५, ३६, ३८; १८-६ से १७, १९ से २३, २५, २९, ३४, ३५, ३६, ३८ से ४२, ४५ से ४९, ५१, ५२; ५५; २३-१३; २५-३० से३३, ३६, ३७, ४३; २६-३५, ३६; ३०-४०; ३१-५३, ५७; ३३-८, ९, ११ से १५, २६ से ३१ । उपेन्द्रवज्रा १८-१८ । मालती + यमुना १५-७ । वंशस्थ ३९-३९। शालिनी ९-१२ से १६, ३९ से ५३; १३-३५, २६-३८ से ४२; ३२-२० से २५; ३७-१२५, १२६ ।।

कल्पस्थाने

इन्द्रवज्रा २-२५, ३२; ३-६ से ८, ३८, ४०, ४२, ४३, ४४; ८-८२ । उपजाति २-२६ से ३१, ३-९ से १७, ३९, ४१; ५-६१ से ८१; ६-३२; ८-७९ से ८१, १३४ । शालिनी ५-५६ से ६०; ८-५९ से ६६;।।

उत्तरतन्त्रे

इन्द्रवज्रा ४-३; ५-३; ६-३, ७, ९, २५, २८; ७-३५, ४०; ११-१०१६; १२-४७, ४८, ५२; १६-३, ५, ८; २२-७, १३, १७; २४-३; २५-१३; २७-६, ७; ४०-९ से १६, १९, २०; ४१४, १४२, १४४, १४५, १४८, १४९; ४१-३८ से ४०, ४३ से ४५, ४८, ४९, ५१; ४२-११; ४४-७, ८, १०, २३, २७, ३२, ३४, ३६, ३७; ४५-३३, ३६, ४३; ४६-१४; ४७-१५, ४६; ४८-४, ५, ७ से ९, १७, ३१, ३२; ४९-९, १२, १५; ५०-२६; ५२-११, १४, १७, २०, २१, २५, ३६, ३८; ५५-८, १०, १४, १५; ५६-१० से १२, १७,१८, २०, २२, २६, २७; ६०-७ । उपजाति १-२६,२७; ५-४ से १०; ६-४ से ६, ८, २३, २७, २९, ३०; ७-२७, ३४, ३६ से ३९, ४१ से ४५; ११३ से ९, ११ से १५, १७, १८; १२-६, ७, ४५, ४९ से ५१, ५३; १६-४, ६, ७, ९; १७-२६, ३३, ३७ से ४१, ४५, ४७, ५०, ५१; २२-६, ८,९ से १२, १४ से १६, १८, १९; २४-१८ से २४; २५-५ से १२, १४ से १६, १८; २८ - ८, ९; ३९-५७, ५८; ४० -८, १३८ से १४०, १४३, १४६, १४७, १५४ से १५७; ४१-३६, ३७, ४१, ४२, ४६, ४७, ५०, ५२ से ५८; ४२-१०, १२ से १५; ४४-३ से ६, ९, ११ से २२; २४ से २६, २८ से ३१, ३३, ३५, ३८ से ४०; ४५-२९, ३१, ३२, ३४, ३५, ३७ से

४१, ४२; ४६-१५ से १९ से २४; ४७-१४, १६, ३७, ४५, ८०, ८१; ४८-६, १० से १६, १८ से ३०, ३३, ४९-१०, ११; ५०-१७, १८, २३ से २६; ५१, ५५, ५६; ६२-४ से १०, १२, १३; १५, १६, १८, १९, २२ से २४, २६ से ३५, ३७, ३९ से ४७; ५४-४०; ५५-७, ९, ११ से १३, १६, १७; ५६-६, ९, १३ से १६, १९, २१, २३ से २५; ५९-३; ६०-२० से २२; ६५-९; ६६-१७ । उपेन्द्रवज्रा १७-२४, २५, २७ से ३२, ३४, ३५, ४२ से ४४, ४६, ४८, ४९; २५-१७; ४७-४७, ४८ । धीरललिता ६४-८४ । प्रहर्षिणी २७-८ से १६; ६०-८ से १६ । वसन्ततिलका ८-६ से ११; १९-३ से १६; ४१-२९, ३०; ४७-१८ से ३६, ३८ से ४४, ५५ से ६४; ५३-३ से ९; ५७-३ से १७; ६२-८ से १३; ६४-६७, ६९, ७२, ७५, ७६, ७७, ७९, ८२ । वंशस्थ २०-६ से १६; २४-४, ५; ४५-१६ से २०, ३०; ५०-६, २९, ३० । शालिनी २-४ से ९; ६-२०; ७-४६; १०-३ से १६; १२-४४; २३-३ से १२; २७-६, ७; ४०-६, ७; ५०-१५, १६, १९ से २२ । स्रग्धरा ४५-९, १० ।।

इन छन्दों लक्षण और उदाहरण में कुछ विशिष्ठ श्लोक :

१) वेदोत्पति अध्याय में –

८ अक्षरवान् अनुष्टुभ् वृत्त (सू.१/३९)

लक्षणः श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम् । द्विचतुः पादयोतर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ।।

उदाहरणः– बीजं चिकित्सितस्यैतत् समासेन प्रकीर्तितम् । सविंशमध्यायशतमस्य व्याख्या भविष्यति ।।

२) गर्भव्याकरण शारीर अध्याय में –

११ अक्षरवाली (४+७) स्वागता (शा. ४/६६)

लक्षणः स्वागता रनभगैर्गुरुणा च.....

उदाहरणः– अव्यवस्थितमतिश्चलद्दृष्टिर्मन्दरत्नधनसंचयमित्रः । किंचिदेव विलपत्यनिबद्धं मारुतप्रकृतिरेष मनुष्यः ।।

३) अन्नपानविधि अध्याय में –

११ अक्षरवाली (४+७) शालिनी (सू. ४६/७९)

लक्षणः मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः--

उदाहरणः– वर्चो मूत्रं संहतं कुर्युरिते । वीर्ये चोष्णाः पूर्वत् स्वादुपाकाः ।। वातं हन्युः श्लेष्मपित्ते च कुर्युः स्निग्धाः कासश्वासकार्श्यापहाश्च ।।

४) अन्नपानविधि अध्याय में –

११ अक्षरवाली (५+६) (सू. ४६/३९)

लक्षणः स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः--

उदाहरणः– ईषत्कषायो मधुरः सतिक्तः । सांग्राहिकः पित्तकरस्तथोष्ण ।। तिलो विपाके मधुरो(कटुकः इति ताडपत्रपुस्तके पाठः) बलिष्ठः । स्निग्धो व्रणे लेपन एव पथ्यः।।

५) वेदोत्पति अध्याय में –

११ अक्षरवाली उपेन्द्रवज्रा (५+६) (सू. १/२१)

लक्षणः उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा ङ्ग

उदाहरणः– अहं हि धन्वन्तरिरदिदेवो जरारुजामृत्युहरो मराणाम् । शल्यांगगंगैरपरैरुपेतं प्राप्तो स्मि गां भूय इहोपदेष्टुम् ।।

६) अन्नपानविधि अध्याय में –

११ अक्षरवाली उपजाति (सू. ४५/२४३)

लक्षणः अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ । पादौ यदीयावुपजातयस्ताः । इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु । वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ।।---

उदाहरणः– पुष्पं च पत्रं च फलं तथैव । यथोतरं ते गुरवः प्रदिष्टाः । तेषां तु पुष्पं कफपितहन्तृ । फलं निहन्यात् कफमारुतौ तु ।।

७) वेदोत्पति अध्याय में –

१२ अक्षरवान् वंशस्थविल (सू. १/४१)

लक्षणः वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ--

उदाहरणः–स्वयम्भुवा प्रोक्तमिदं सनातनं पठेद्धि यः काशिपतिप्रकाशितम् । स पुण्यकर्मा भुवि पूजितो नृपैरसुक्षये शक्रसलोकतां व्रजेत् ।।

८) गर्भव्याकरण शारीर अध्याय में –

१२ अक्षरवान् तोटक (शा. ४/७५)

लक्षणः वद तोटकमब्धिसकारयुतम्

उदाहरणः–द्दढसास्त्रमतिः स्थिरमित्रधनः परिगण्य चिरात् प्रददाति बहु । परिनिश्चितवाक्यपदः सततं गुरुमानकरश्च भवेत् सदा ।

९) गर्भव्याकरण शारीर अध्याय में –

१२/१३ अक्षरवाली मालती+यमुना (शा. ४/६५)

लक्षणः भवति ननरयाथ मालती सा, नजजरगा यमुना समन्तमेति.....

उदाहरणः–अधृतिरद्दढसौह्रदः कृतघ्नः कृशपरुषो धमनीततः प्रलापी । द्रुतगतिरटनो नवस्थितात्मा वियति च गच्छति संभ्रमेण सुप्तः ।।

१०) अमानुषोपसर्गप्रतिषेध में –

१३ अक्षरा(३+१०) प्रहर्षिणी छन्द (उ. ६०/८ से १६)

लक्षणः त्र्यासाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम् --

उदाहरणः–सन्तुष्टः शुचिरपि चेष्टमाल्यगन्धो । निस्तन्द्री ह्यवितथसंस्कृतप्रभाषी ।।

तेजस्वी स्थिरनयनो वरप्रदाता । ब्रह्मण्यो भवति नरः स देवजुष्टः ।। ८ ।।

११) प्रत्यकमर्मनिर्देश शारीर अध्याय में –

१४ अक्षरवाली वसन्ततिलका (शा. ६/३३)

लक्षणः उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौ गः

उदाहरणः–मर्माणि शल्यविषयार्थमुदाहरन्ति यस्माच्च मर्मसु हता न भवन्ति सद्यः ।।

जीवन्ति तत्र यदि वैद्यगुणेन केचिते प्राप्नुवन्ति विकलत्वमसंशयं हि ।।

१२) गर्भव्याकरण शारीर अध्याय में –

१५ अक्षरवाली (८+७) मालिनी (शा. ४/८०)

लक्षणः ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः

उदाहरणः–प्रकृतिमिह नराणां भौतिकी केचिदाहुः, पवनदहनतोयैः कीर्तितास्तासु तिस्रः ।।

स्थिरविपुलशरीरः पार्थिवश्च क्षमावान्,शुचिरथ चिरजीवी नाभसः खैर्महद्भिः ।।

१३) स्वस्थवृत्ताध्याय में –

१८ अक्षरा (६+१२) धीरललिता (उ. ६४/८४)

लक्षणः यमौ न्सौ तः सः स्याद् रस-रवि-विरामा धीरललिता--
उदाहरणः-विसृष्टे विण्मूत्रे विशदकरणे देहे च सुलघौ ।
विशुद्धे चोद्गारे हृदि सुविमले वाते च सरति ।
तथा न्नश्रद्धायां क्लमपरिगमे कुक्षौ च शिथिले ।
प्रदेयस्त्वाहारो भवति भिषजां कालः स हि मतः ।।

१४) रक्तपितप्रतिषेध में -

२१ अक्षरा (७+७+७) स्रग्धरा वृत (उ. ४५/९,१०)
लक्षणः म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् --
उदाहरणः-दौर्बल्यश्वासकासज्वरवमथुमदास्तन्द्रितादाहमूर्च्छा ।
भुक्ते चान्ने विदाहस्त्वधृतिरपि सदा हृद्यतुल्या च पीडा ।।
तृष्णा कण्ठस्य भेदः शिरसि च दवनं पूतिनिष्ठीवनं च ।
द्वेषो भक्ते विपाको विरतिरपि रते रक्तपितोपसर्गाः ।। इति शम् ।।

[E] ''शारीरे सुश्रुतः श्रेष्ठः''

सिरा और धमनी के आजकल प्रचालित एवं रूढ टर्म्स से सुश्रुत के अर्थ को प्रतिपादित करने पर डॉ. भा. गो. घाणेकरजी जैसे विचारकों ने ''शारीरे सुश्रुतो नष्टः'' लिखने का दुःसाहस कर दिया ।

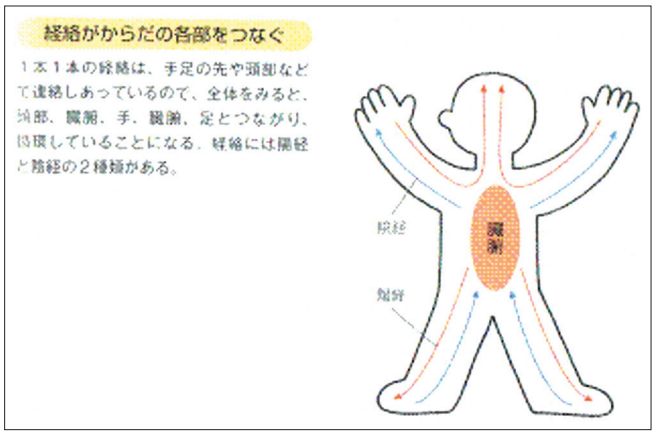

The visual encyclopedia of East Asian medicine by Huangfu Mi

वास्तव में ''शारीरे सुश्रुतः श्रेष्ठः'' लोकोक्ति सही है । क्योंकिः--

(१) नाभितः प्रसृताः सिराः (शा. ७/२३);हृदय शब्द का ग्रहण केन्द्रस्थलों के लिये हुआ है ।
(२) चतुर्विंशतिर्धमन्यो नाभिप्रभवाः ....धमनीनाम् एकैका शतधा सहस्रधा चोतरोत्तरं विभज्यन्ते.....
सर्वागगताः सविभागा व्याख्याताः (शा. ९/३ से १०);नाभि भी शरीर का केन्द्रस्थल है ।
(३) पञ्चाभिभूतास्त्वथ पञ्चकृत्वः पञ्चेन्द्रियं पञ्चसु बावयन्ति । पञ्चेन्द्रियं पञ्चसु भावयित्वा
पञ्च त्वमायान्ति विनाशकाले (शा. ९/११); शरीर के निर्माण में ५ महाभूत केन्द्र बिन्दु हैं ।
(४) मूलात् खात् अन्तर देहे प्रसृतं त्वभिवाहि यत् स्रोतस् तत् इति विज्ञेयम् सिरा-धमनिवर्जितम्
(शा. ९/१३); यह चाइनीज के एक्यूपंक्चर वाले २४ चेनल्स का दिशा सूचक वाक्य है ।
(५) आक्षेपक निदान (नि. १/६०);
(६) शुक्ल, पीत, कृष्ण सिरावर्णविभाग(नि. ७/८ से १०);
(७) धमन्यः संवृतद्वाराः कन्यानां स्तनसंश्रिताः (नि. १०/१६)...
(८) चतुर्विधा यास्तु सिराः शरीरे प्रायेण ता मर्मसु सन्निविष्टाः । स्नाय्वस्थिमांसानि तथैव सन्धीन् सन्तर्प्य देहं प्रतिपालयन्ति(शा. ६/१८).....इत्यादि सन्दर्भ विचार-विमर्श-सापेक्ष हैं । ये ओक्यूपंक्चर चिकित्सा के वैदिक सिद्धान्त को स्थापित करते हैं, जिसे मेरे प्रिय शिष्य डॉ. विनोद कुमार जोशी ने अपनी स्व. रामलाल शाह के सहयोग से लिखी पुस्तक Vedic Health Care System (New Age Books, Delhi 2002) में सिद्ध कर दिया है ।

चाइनीज एक्यूपक्चर के २४ चेनल्स	=	सुश्रुतोक्ताः २४ धल्न्यद्र (सू. १४/३)
Lung Channel (Lu) x 2	=	ऊर्ध्वगा फुफ्फुसीया धमनी २
Heart Channel (Ht) x 2	=	ऊर्ध्वगा हृदया धमनी २
Liver Channel (Liv) x 2	=	ऊर्ध्वगा याकृति धमनी २
Spleen Channel (Sp) x 2	=	ऊर्ध्वगा प्लीहाभिमुखी धमनी २
Kidney Channel (K) x 2	=	ऊर्ध्वगा वृक्कीया धमनी २
Pericardium Channel (P) x 2	=	तिर्यग्गा तलहृदया धमनी २
Sanjiao Channel (Sj) x 2	=	तिर्यग्गा श्लेष्माशया धमनी २
Large Intestine Channel (LI) x 2	=	अधोगा बृहदन्त्रीया धमनी २
Small Intestine Channel (SI) x 2	=	अधोगा लघ्वन्त्रीया धमनी २
Stomach Channel (St) x 2	=	अधोगा आमाशयाभिमुखी धमनी २
Gall Bladder Channel (Gb) x 2	=	अधोगा पित्ताशयाभिमुखी धमनी २
Urinary Bladder Channel (Ub)×2	=	अधोगा मूत्राशयाभिमुखी धमनी २

पांचभौतिक पेयादि ४ प्रकार के है रसवाले ..... आहार का ठीक तरह से परिणाम होने पर जो सार भूत परम सूक्ष्म रस बनता है, उसका सारे शरीर में प्रसाद हृदय से होता है.....ये २४ धमनियाँ हैं, (जिन्हें आर्ट्री मान लेने से दोष हो जाता है) ।। (सू. १४/३)

चाइनीज एक्यूपंक्चर के ७०० बिन्दु, सुश्रुत की ७०० सिरायें हैं (शा. ७/६) जो मानव देह में १० वातवहा सिरा १७५ स्थानों पर विभक्त हैं, इन्हें विण्डमेटल वाहक तथा १७५ स्थानों पर विभक्त १० पित्तवहा सिरा फायर मेटल वाहक, १७५ स्थानों पर विभक्त १० कफवहा सिरा वाटर मेटल और १७५ स्थानों पर विभक्त १० रक्तवहा सिरा सारवाहक मेटल के नाम से मान लिये गये हैं ।

अन्योन्यानुप्रविष्टानि सर्वाण्येतानि निर्दिशेत् । स्वे स्वे द्रव्ये तु सर्वेषां व्यक्तं लक्षणमिष्यते ।। (सु.शा. १/२१)

(Essentials of Chinese Acupuncture Page 17) में–
आकाश तत्व को वुड wood – मान कर यकृत और पित्ताशय के लिये, वायु तत्व को मेटल metal –मान कर फुफ्फुस और बृहदन्त्र के लिये, तेजस् तत्व को फायर fire – मान कर हृदय और लघ्वन्त्र के लिये, अप् तत्व को वॉटर water –मान कर वृक्क और मूत्राशय के लिये और पृथ्वी तत्व को अर्थ earth –मान कर प्लीहा और आमाशय के लिये माना गया है ।

यह चिकित्सा पद्धति भी अनेक देशों में मान्यता प्राप्त है । इस विषय पर Illustration of Acupuncture point by Haruto Kinoshita, Ph. D. M. की पहली बार १९७० अप्रैल में प्रकाशित यह पुस्तक २०१० जनवरी २० के दिन २९ वीं बार छपी है ।

आचार्य सुश्रुत के निम्नांकित संदर्भों के आधार से इस विषय पर सन्धाय – संभाषाओं का आयोजन होना चाहिये, ताकि शारीरे सुश्रुतः श्रेष्ठः अथवा नष्ट : की समालोचना की जा सके।
प्रभाव की तो बात ही मत पूछे, सु.सू. ४/१९–२१ श्लोकों ने तो विचार–विमर्श पर ताला लगा दिया ।
अमीमांस्यान्यचिन्त्यानि प्रसिद्धानि स्वभातः।.....तस्मात् तिष्ठेत् तुमतिम ान् आगमे न तु युक्तिशु
इतना लिख कर भी अन्त में.....
समुद्र इव गम्भीरम् नैव शक्यं चिकित्सितम् । वक्तुं निरवशेषेण श्लोकानाम् अयुतैरपि ।।१७।।...
तदिदं बहुगूढार्थं चिकित्साबीजम् ईरितम् । .....तस्मान् मतिमता नित्यं नाना शास्त्रार्थदर्शिना.....
सर्वम् ऊह्यम् अगाधार्थम् शास्त्रम् आगमबुद्धिना ।। २० ।। (उ. १९/१७–२०)
यद् अनिर्दिष्टम् बुध्या अवगम्यते तद् ऊह्यम् (उ. ६५/४०)
एकं शास्त्रम् अधीयानो न विद्यात् शास्त्रनिश्चयम् । तस्माद्बहुश्रुतः शास्त्रं विजानीयाच्चिकित्सकः।। (सू. ४/७)
वाक् सौष्ठवेर्थविज्ञाने प्रागल्भ्ये कर्मनैपुणे । तदभ्यासे च सिद्धौ च यतेताध्ययनान्तगः ।। (सू. ३/५६)

इस विषय पर आयुर्वेद जगत् में तिब्बत, नेपाल, चीन, जापान, आरब, श्रीलंका जैसे देशों से मिल पाने वाले ग्रन्थों का संग्रह किया जा कर तद् विद्य विचारकों की सन्धाय–सम्भाषा सापेक्ष है । तभी सिद्ध होगा

शारीरे सुश्रुतः श्रेष्ठः सूत्रस्थाने तु वाग्भटः । निदाने माधवः श्रेष्ठश् चरकस्तु चिकित्सिते ।।

सुश्रुत की कतिपय विशेषतायें

१) मर्माणि शल्यविषयार्थमुदाहरन्ति; सवर्णीकरण (चि.९/२२);
२) क्षारसूत्रोपयोगः नाडीव्रणे (चि.१७/२९–४१)
३) सोने–चाँदी–ताम्र–मृत् –चर्म के बरतनों का उपयोग (चि.२९/१३)
४) औषधीपति सोम (चि.१४/ २६,२७ से ३१)
५) सू. २/३ बाह्मण आदि चतुर्वर्ण, योग्य–शुद्र को भी पढाने का निर्देश (सू.२/५);
६) काश्मीर, हिमवत् , विन्ध्य–श्रीशैलादि पर्वत, सिन्धु आदि नदियों (गंगा नही है)और विदेह, यवन आदि देशों के नाम – नदीषु शैलेषु सरःसु चापि.....सर्वत्र भूमिर्हि वसूनि धत्ते ।।(चि. ३०/४०)
७) क. ४/३८ पर सर्पदंश के विविध लक्षणों का बोध सर्पों की लिंग,जाति,वय–रोग परक अवस्थाओं के आधार पर किया गया । इससे आचार्य सुश्रुत का जलौका,सर्प आदि के जीव विज्ञान विषयक बोध का परिज्ञान किया जाता है ।
८) शोकशल्यं व्यपनयेद् उन्मादे (उ. ६२/३५)।।
९) उत्तर तन्त्र में लिखे जाने के विषय का निर्देश सूत्रादि सभी स्थानों में मिलता है, यथा सविंशमध्यायशतम् एतदुक्तं विभागशः । इहोद्दिष्टान् अनिर्दिष्टानर्थान् वक्ष्याम्यथोत्तरे ।। (क. ८/१४०)
१०) चिकित्सा से अधिक पुण्यतम और कोई भी विज्ञान नही है

सनातनत्वाद् वेदानाम् अक्षरत्वात् तथैव च । तथा ह्यष्टफलत्वाच्च हितत्वादपि देहिनाम् ।। (क. ८/१४१)..''चिकित्सितात् पुण्यतमं न किञ्चिदपि सुश्रुतः''.... '' इह प्रेत्य च मोदते '' (क. ८/१४३)
११) शालाक्य तन्त्र में विदेहाधिपति को अधिकारी बतलाते हुए भी उनसे अधिक जानकारी देखे जाने का सुश्रुत लिखते हैं । (उ.१/६)

नारी स्तन्य का नेत्र रोगों में प्रचुर प्रयोग किया गया है । (उ. १०/६,८,९,११), इसे न्यायचन्द्रिकाकार ने उपधातुओं में गिनाया है । (सु.नि. १०/१८ भोजेपि)

अञ्जन–निर्माण के लिये जाङ्गम, औद्भिद एवं पार्थिव द्रव्यों का उपयोग (उ. १७/२४,२५)

गन्धोदक पोट्टली कल्पवत प्रत्यञ्जन निर्माण ''तुत्थपोट्टली''(उ. १७/४०)

''भिल्लोटगन्धोदकसेकसेचितं प्रत्यञ्जने चात्र हितं तु तुत्थकम् ''(गन्धा+उदक)(गन्धोदक) विचारणीय बन जाता है । क्योंकि सुतार नाम से पारद का भी प्रयोग किया गया है ।
१२) Operation Theater वातातपरजोहीनवेश्मनि (उ. १८/६) एयरकण्डीशन रूम

- सन १९५०–५१ में भिषग्वर कक्षा के मेरे अभ्यास काल में इसे आद्योपान्त टीकाओं के साथ इसे पढ़ा था । इस बार फिर से स्वाध्यायान्तर्गत पठन करने पर पिछले पचास वर्षों आई हुई विशेषतों को समस्त स्वाध्यायशील बन्धुओं के समक्ष विचार–विमर्श हेतु आयु जर्नल के माध्यम से प्रस्तुत करा पाने के लिये प्रो. हरिमोहन चन्दोला आदि सभी प्रकाशक बन्धुगण मेरी शुभकामनाओं के सत्पात्र हैं ।